卐 वीतरागाय नमः 卐

विशद
त्रिकाल तीर्थंकर विधान पूजन
माण्डना

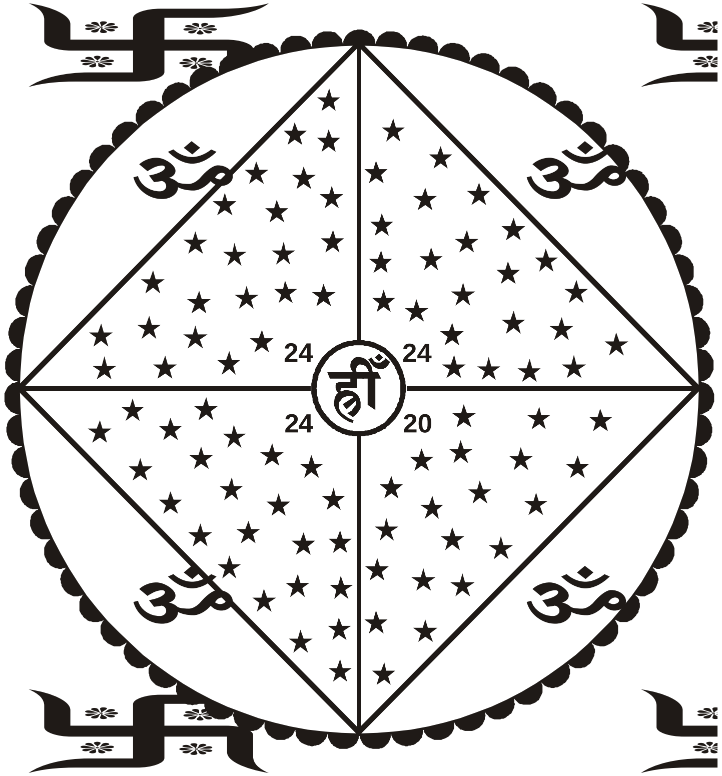

रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

कृति - विशद त्रिकाल तीर्थंकर विधान पूजन

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम -2008 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज एवं

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - किरण, आरती दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.) फोन : 07581-274244

3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624

4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

मूल्य - 21/- रु. मात्र

:- अर्थ सौजन्य :-

1. श्री रतनलाल भागचन्दजी भगत (सावरवाले) केकड़ी
2. श्रीमती मनफूल देवी धर्मपत्नी श्री मदनलालजी जैन (जूनियावाले) केकड़ी
3. श्री दानमल हीराबाबू बाकलीवाल, टोडारायसिंह, जिला-टोंक
4. श्री माणकचन्द कैलाशचंद प्रकाशचंद कनोई (बघेरावाले) केकड़ी
5. श्री गोकुलचन्द विमलकुमार नौरतमल डेठाणी, मालपुरा, जिला-टोंक

नोट : रोटतीज व्रत के उद्यापन पर भी यह विधान करना चाहिए।

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

अपनी बात

अतीत अनागत वर्तमान की, त्रय चौबीसों मैं ध्याऊँ।
बीस जिनेश्वर को विदेह में, भाव सहित मैं सिरनाऊँ।।

आज का हर मानव परमुखापेक्षी है। अतः जब भी उसे स्वयं से अन्य उत्कृष्ट दिखाई देता है तो वह उसे महान मानकर उस जैसा बनने का प्रयास करता है तथा उसके जीवन को हृदयांगम करने की चेष्टा करता है।

निकट भव्य प्राणी उन उत्कृष्ट विभूतियों के आचरण का अनुगामी हो अपना कल्याण कर लेता है; किन्तु हीन संहनन युक्त प्राणी उन महान विभूतियों की विविध अवस्थाओं का गुणगान करते हुये स्वयं को धन्य मानता हुआ शुभोपयोगी तो बन ही जाता है।

परम पूज्य क्षमामूर्ति गुरुवर **आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज** ने ऐसी ही त्रैकालिक महाविभूतियों में पंचकल्याणकों से युक्त उनके नामों की सार्थक व्यंजना का प्रस्तुतीकरण अतीव कुशलता से व्यक्त किया है जो अपने आप में अनूठा प्रयोग तो है ही सभी के लिये गुण गाह्य भी हो गया है।

अलंकारिक शब्द, सौष्ठव तथा छन्दों की विविधता इस विधान की अलौकिक शोभा को दर्शा रहा है एवं तीर्थंकर पद योग्य आवश्यक भावनाओं के प्रति उत्कंठा भी पैदा कर रहा है। ऐसी यह अनुपम रचना हम अबोध अज्ञानी जीवों के हृदय में धर्म के प्रति अडिग आस्था पैदा करने में सक्षम है तथा मुक्ति मार्ग को प्रशस्त करते हुये भक्तिरूपी नौका पर आरूढ़ होने को उत्साहित करते हुये मुक्ति नगरी से निकटता स्थापित करने में सक्षम है।

गुरुवर आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की लेखनी श्रावकोद्धार हेतु अनवरत चलती रहती है। आप द्वारा सृजित विधान जन-जन के लिये कल्याणकारी हैं। ऐसे गुरुवर की गुण-गरिमा का गान करने में स्वयं को असमर्थ पाते हुये मैं यही निवेदन करता हूँ किह्नह्न

सभी समंदर मसि करूँ, लेखनी सब वनराय।
धरती सब कागद करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय।।

आप चिरायु हों। ऐसे ही जन उद्बोधक साहित्य सृजन करते रहें। यही कामना करता हुआ आपके चरणों में शत-शत नमन करता हूँ।

- पं. सुगनचन्द जैन, केकड़ी

जिनेन्द्र अर्चना (भजन)

आओ सब मिल करें अर्चना, तीर्थंकर भगवान की।
अर्हन्तों की पूजा होती, भक्तों के कल्याण की।।
जय-जय जिनवरम्-जय तीर्थंकरम्।

तीर्थंकर प्रकृति के बन्धक, गर्भकल्याणक पाते हैं।
पन्द्रह माह रत्न वृष्टि कर, इन्द्र सभी हर्षाते हैं।।
जिन भक्ति है तीन लोक में, जग जीवों के त्राण की।
पञ्च कल्याणक..... ।।1।।

जन्मोत्सव पर इन्द्र भक्ति से, ऐरावत ले आता है।
पाण्डुक शिला पर क्षीर नीर से, अतिशय न्हवन कराता है।।
तीर्थंकर जिन की भक्ति है, भक्तों के सम्मान की।
पञ्च कल्याणक..... ।।2।।

देख दशा संसार वास की, सद् संयम प्रभु जी पायें।
केश लुँच कर दीक्षा धारी, पञ्च महाव्रत अपनाए।।
कर्म निर्जरा होती भारी, बलिहारी है ध्यान की।
पञ्च कल्याणक..... ।।3।।

चार घातिया कर्म नाशकर, केवलज्ञान जगाते हैं।
इन्द्र भक्ति से वंदन करके, समवशरण बनवाते हैं।।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, प्राणी केवल ज्ञान की।
पञ्च कल्याणक..... ।।4।।

अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव नगरी को जाते हैं।
अविनाशी अक्षय अखण्ड शुभ, मोक्ष लक्ष्मी पाते हैं।।
भव्यों को शिव देने वाली, पूजा है निर्वाण की।।
पञ्च कल्याणक..... ।।5।।

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।
शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्यह्मह्म ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा- नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
"विशद" भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ्य पद प्राप्ताय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद : (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

त्रिकाल तीर्थंकर स्तवन

सप्त तत्त्व में सम्यक् श्रद्धा, धारण करते हैं जो लोग।
उन भव्यों को मोक्ष मार्ग का, मिलता है अतिशय संयोग।।
अनायास ही मोक्ष मार्ग पर, करते हैं वह जीव प्रयाण।
अल्पकाल में उन जीवों का, हो जावे भाई कल्याण।।1।।

सम्यक् ज्ञानाचरण प्राप्त कर, मोक्ष मार्ग अपनाते हैं।
कर्म निर्जरा करके मुक्ति, पथ पर बढ़ते जाते हैं।।
रत्नत्रय की महिमा सारे, जग में होती अपरम्पार।
प्राप्त करें जो भव्य भाव से, हो जाते हैं भव से पार।।2।।

सोलहकारण भव्य भावना, जो भी प्राणी भाते हैं।
प्रबल पुण्य का योग बने तब, तीर्थंकर पद पाते हैं।।
प्रथम भावना दर्श विशुद्धी, अत्यावश्यक रही प्रधान।
सर्व लोक में सर्वश्रेष्ठ है, सर्व गुणों में कही महान्।।3।।

पञ्च कल्याणक भरतैरावत, में जिनवर के होंय सदैव।
पर विदेह में पाँच तीन दो, आकर सदा मनाते देव।
तीर्थंकर या केवलज्ञानी, श्रुतकेवली के पद मूल।
क्षायक सद्दर्शन पाते हैं, मुक्ति पथगामी अनुकूल।।4।।

यही भावना भाते हैं हम, जिन पद मिलें हमें हर बार।
मोक्ष प्राप्त न होवे जब तक, करें वन्दना बारम्बार।।
अनुक्रम से उस पद का भी शुभ, हमको मिल जाए अधिकार।
'विशद' मोक्ष पद को हम पावें, भ्रमण छूट जावे संसार।।5।।

●●●

श्री त्रिकाल तीर्थंकर पूजन

स्थापना

भूतकाल अरु वर्तमान के, अरु भविष्य के जिन चौबीस।
पञ्च विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान होते हैं बीस।।
मन-वच-तन से भाव पुष्प ले, करते हैं सम्यक् अर्चन।
अपने उर के सिंहासन पर, करते हैं हम आह्वानन्।।
हे नाथ ! पधारो आकर के, न हमको प्रभु निराश करो।
हम भक्त रहेंगे सदियों तक, प्रभु मेरा भी विश्वास करो।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी भरतैरावत विदेहस्य अतीत अनागत वर्तमान तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वलोगोत्तम भरतैरावत विदेहस्य अतीत अनागत वर्तमान तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्वजगत्शरण भरतैरावत विदेहस्य अतीत अनागत वर्तमान तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

इन्द्रिय के विषयों में फँसकर, हम जग भोगों में अटके हैं।
पाकर के जन्म-जरा-मृत्यु, प्रभु तीन लोक में भटके हैं।।
हे नाथ ! आपके चरणों में, हम नीर चढ़ाने आए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, नहिं शांति जरा भी मिल पाई।
मन आकुल व्याकुल रहा सदा, निज आतम की सुधि बिसराई।।
यह शीतल चंदन घिस करके, हे नाथ ! चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःखमय अथाह भवसागर में, सदियों से गोते खाए हैं।
अक्षय अनंत पद बिना जगत में, बार-बार भटकाए हैं।।
यह अक्षय अक्षत धोकर के, हे नाथ ! चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

दिन-रात वासना में रत रहकर, अपने मन में सुख माना।
पुरुषत्व गँवाया है अपना, निज का पुरुषार्थ नहीं जाना।।
हम कामवासना नाश हेतु यह, पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुभोजन खाकर के हमने, भव-भव में भूख मिटाई है।
न तृष्णा नागिन शांत हुई, हर चीज बनाकर खाई है।।
हम क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य बनाकर लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार तिमिर के नाश हेतु, दीपक से कीन्हा उजियाला।
उससे भी काम न चल पाया, है मोह तिमिर अतिशय काला।।
हो नाश मोह का अंध पूर्ण, हम दीप जलाकर लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला में जलकर, हमने संसार बढ़ाया है।
दलदल में फंसते गये अधिक, नहिं छुटकारा मिल पाया है।।
यह कर्म जलाने हेतु नाथ, हम धूप जलाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों को अमृत फल माना, वश भोग-भोग का योग रहा।
भोगों के संग्रह में हमने, जीवन भर भारी कष्ट सहा।।
हम मोक्ष प्राप्ति के हेतु नाथ, फल श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग का सारा वैभव भी, न हमको सुखी बना पाया।
वैभव में जीवन गवाँ दिया, फिर अंत समय में पछताया।।
हम पद अनर्घ के हेतु नाथ, यह अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर तिय काल के, विद्यमान जिन बीस।
गाते हैं जयमालिका, चरण झुकाकर शीश।।

(शंभु छंद)

तीनकाल त्रय चौबीसी के, रहे बहत्तर जिन तीर्थेश।
ध्यानमयी मुद्रा है पावन, जिनका रहा दिगम्बर भेष।।

पञ्च विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान होते हैं बीस।
उनके चरण कमल की भक्ति, में नत रहते सुर-नर ईश।।
हमने काल अनादि गँवाया, विषय कषायों में फँसकर।
राग-द्वेष अरु मोह में जीवन, बीता मेरा रच-पचकर।।
चतुर्गति में भ्रमण किया है, कष्ट अनंतानंत सहे।
सम्यक्धर्म कभी न भाया, कर्म कुपंथ अनंत गहे।।
आज पुण्य का योग मिला जो, शरण आपकी हम आए।
वीतराग निर्ग्रंथ दिगम्बर, मुद्रा के दर्शन पाए।।
हे प्रभु ! मेरी मति सुमति हो, सम्यक् पथ को ग्रहण करूँ।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण जिन, धर्म हृदय से वरण करूँ।।
रत्नत्रय की बहे त्रिवेणी, उसमें ही अवगाहन हो।
निज स्वभाव में रमण होय मम्, यह जीवन मनभावन हो।।
प्रभु आपकी वाणी सुनकर, मोक्षमार्ग का ज्ञान हुआ।
अतिशय अनुपम और अलौकिक, निज स्वरूप का भान हुआ।।
हे जिनवर ! आशीष दीजिए, निज स्वरूप में रमण करूँ।
छोड़ के सारे कुपथ पंथ को, मोक्षमार्ग पर गमन करूँ।।
कुछ भी चाह नहीं है मेरी, न ही अंतर में कुछ आश।
अंतिम है यह आश हमारी, मोक्ष महल में हो मम् वास।।
हे ज्ञानेश्वर ! है तुम्हें नमन्, हे विमलेश्वर है तुम्हें नमन्।
हे विशद ज्ञान के ईश नमन्, हे तीर्थंकर जिन तुम्हें नमन्।।

ॐ ह्रीं त्रिकाल सम्बन्धी द्विसप्तति तीर्थंकरेभ्यो शाश्वत विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्योः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीर्थंकर जिनतीर्थ हैं, श्रीधर श्री के नाथ।
अर्हत् घाती कर्म के, विशद झुकाऊँ माथ।।

इत्याशीर्वाद : (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

भूतकालीन श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन

स्थापना

अपने सारे कर्म नाशकर, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अनंत चतुष्टय पाने वाले, सर्वलोक में हुए महान्।।
भूतकाल में चौबिस जिनवर, हुए लोक मंगलकारी।
अक्षयपद को पाने वाले, सिद्ध शिला के अधिकारी।।
तीर्थंकर पद धारी जिन का, करते हैं हम आह्वानन्।
तीन योग से चरण कमल में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन भरत-ऐरावत क्षेत्रस्य चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन भरत-ऐरावत क्षेत्रस्य चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन भरत-ऐरावत क्षेत्रस्य चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम प्रासुक करके जल निर्मल, प्रभु चरण चढ़ाने लाए हैं।
जन्मादि जरा के रोगों से, छुटकारा पाने आए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।1।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शीतल चंदन घिस करके, हे नाथ ! चढ़ाने लाए हैं।
भव का संताप नशाने को, तव चरणों में सिर नाए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।2।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अक्षय अक्षत हैं अनुपम, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
जो है अखण्ड अविनाशी पद, वह पद पाने हम आए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।3।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह भाँति-2 के मनहारी, शुभ पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
हम कामबाण की बाधा को, प्रभु पूर्ण नशाने आए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।4।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बनाकर के मनहर, हम श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, प्रभु चरण शरण में आए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।5।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह घृत का दीप बनाकर के, प्रभु यहाँ जलाकर लाए हैं।
छाया अंतर में घोर तिमिर, हम उसे नशाने आए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।6।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप बनाकर के ताजी, प्रभु यहाँ जलाने लाए हैं।
हों नष्ट कर्म यह अष्ट मेरे, हम भक्ति करने आए हैं।।
हम अष्ट कर्म का नाश करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।7।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सरस पक्व फल लिए नाथ !, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
है मोक्ष महाफल सर्वोत्तम, वह फल पाने को आए हैं।।
हम मोक्ष महाफल प्राप्त करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।8।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट गुणों की प्राप्ति हेतु, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
प्रभु भव बंधन से छूट सके, अतएव शरण में आए हैं।।
हम पद अनर्घ्य शुभ प्राप्त करें, हे नाथ ! हमें दो यह आशीष।
हमको प्रभु भव से पार करो, हम चरणों झुका रहे हैं शीश।।9।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वलयः

दोहा– **भूतकाल में हुए हैं, श्री जिनेन्द्र चौबीस।**
पुष्पांजलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।।

प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

विशद त्रिकाल तीर्थंकर पूजा विधान

भूतकाल चौबीस में, हुए मोक्ष के ईश।
तीर्थंकर निर्वाण जी, झुका रहे हम शीश।।1।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री निर्वाण जिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागर नाम जिनेन्द्र का, पाए ज्ञान प्रकाश।
उनके वंदन से मिले, हमको मुक्ति वास।।2।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री सागर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महासाधु कर साधना, किए कर्म का नाश।
ज्ञान ध्यान तप से किया, केवलज्ञान प्रकाश।।3।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री महासाधु जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल गुणों को प्राप्त कर, हुए विमलप्रभ देव।
विमल गुणों के हेतु हम, वंदन करें सदैव।।4।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री विमलप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध बुद्ध पद में रहे, श्री शुद्धाभ जिनेन्द्र।
अतः वंदना कर रहे, जिनकी देव शतेन्द्र।।5।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री शुद्धाभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उभय श्री को प्राप्तकर, श्रीधर जिन तीर्थेश।
मोक्ष लक्ष्मी पा गये, क्षण में प्रभु विशेष।।6।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्रीधर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीदत्त जिनदेव ने, किया कर्म का अंत।
मोक्षप्राप्त करके हुए, मुक्ति वधु के कंत।।7।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्रीदत्त जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध बने सिद्धाभ जिन, अष्टकर्म को नाश।
अष्ट गुणों को प्राप्त कर, पाए मोक्ष निवास।।8।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री सिद्धाभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कर्म मल नाशकर, बने अमलप्रभ देव।
विशद गुणों को प्राप्तकर, बनू अमल स्वमेव।।9।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री अमलप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्धर जिन करते सदा, जीवों का उद्धार।
कर्म बलि को नाशकर, होते भव से पार।।10।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री उद्धर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निदेव ध्यानाग्नि से, कर्मेंधन को नाश।
पूज्य हुए त्रय लोक में, करके सुगुण विकास।।11।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री अग्निदेव जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम जिनवर ने स्वयं, संयम को उर धार।
शिव रमणी के बन गये, आप स्वयं भरतार।।12।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री संयम जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छंद)

शिवपुर वासी हे शिवदेव !, तव पद वंदन करूँ सदैव।
शिवपद पाने आए द्वार, सर्व जगत में मंगलकार।।13।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री शिवदेव जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर कुसुमाञ्जलि नाथ, झुका रहे तव चरणों माथ।
जोड़ रहे हम दोनों हाथ, मोक्ष महल तक देना साथ।।14।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री कुसुमाञ्जलि जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन उत्साह दिखाओ राह, मन में जगी एक ही चाह।
मोक्षमार्ग न हो अवरुद्ध, ध्यान करूँ आतम का शुद्ध।।15।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री उत्साह जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेश्वर परमानंद दाता, तीन लोक में हुए विधाता।
महिमा जिनकी विस्मयकारी, प्रभु चरणों में ढोक हमारी।।16।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री परमेश्वर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानेश्वर जी ज्ञान जगाए, जिनकी महिमा कही न जाए।
लोकालोक प्रकाशक सारा, जिन चरणों में नमन् हमारा।।17।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री ज्ञानेश्वर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलज्ञान के धारी ईश्वर, विमलेश्वर कहलाए महीश्वर।
दिव्य रही है जिनकी वाणी, जग में जन-जन की कल्याणी।।18।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री विमलेश्वर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका यश फैला है भारी, नाम यशोधर मंगलकारी।
सुर-नर-पशु जिनके गुण गाते, प्रभु के पद हम शीश झुकाते।।19।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री यशोधर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णमती तीर्थंकर भाई, भवि जीवों को हुए सहाई।
मोक्षमार्ग पर कदम बढ़ाया, सबको मोक्षमार्ग दर्शाया।।20।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री कृष्णमती जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानमति जिन ज्ञान स्वरूपी, द्रव्य जानते रूपारूपी।
सबको ज्ञान स्वभाव बताए, सार्थक नाम प्रभु जी पाए।।21।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री ज्ञानमति जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धमति जिनवर कहलाए, शुद्ध मनोबल आप बनाए।
शुद्ध बुद्ध शिवपद को पाए, तव चरणों हम शीश झुकाए।।22।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री शुद्धमति जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण भद्रता को प्रभु पाए, श्री भद्र प्रभु जी कहलाए।
पाने यहाँ भद्रता आए, जिन चरणों में शीश झुकाए।।23।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री भद्र जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्य अनंत प्रभु प्रगटाए, सर्व लोक में पूज्य कहाए।
अनंतवीर्य जिनवर कहलाए, तव चरणों में शीश झुकाए।।24।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन तीर्थंकर श्री अनंतवीर्य जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- यह अतीत के जानिए, तीर्थंकर चौबीस।
तिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं अतीतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- भूतकाल में हो गये, तीर्थंकर चौबीस।
जयमाला गाते यहाँ, चरण झुकाकर शीश।।

(शंभु छंद)

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, यह सौभाग्य बनाया था।
कर्म घातिया नाश किए फिर, केवलज्ञान जगाया था।।

भूतकाल की चौबीसी में, हुए अलौकिक जिन तीर्थेश।
तीर्थंकर पदवी अवनी पर, विस्मयकारी रही विशेष।।

भव्य जीव ही इस पदवी को, संयम द्वारा पाते हैं।
भेदज्ञान के द्वारा पहले, सद्श्रद्धान जगाते हैं।।

सम्यक्दर्शन के द्वारा वह, सम्यक्ज्ञानी बनते हैं।
सम्यक्चारित धारण करके, कर्म श्रृंखला हनते हैं।।

सम्यक्तप के द्वारा बहुतक, कर्म निर्जरा करते हैं।
आत्मध्यान के द्वारा सारी, कर्म कालिमा हरते हैं।।

क्षपक श्रेणी पर कर आरोहण, हो जाते हैं जो निर्ग्रंथ।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, बन जाते क्षण में अर्हंत।।

समवशरण की रचना करते, स्वर्ग लोक से आकर इन्द्र।
दिव्य देशना पाते प्रभु की, सुर-नर पशु और राजेन्द्र।।

प्रातिहार्य से सज्जित होता, समवशरण अतिशय मनहार।
अतिशय करते देव अनेकों, भक्ति भाव से मंगलकार।।

कमलासन पर अधर विराजित, समवशरण में होते देव।
चतुर्दिशा में मुख मुद्रा के, दर्शन सबको होंय सदैव।।

ऐसी परम विभूति पाकर, भी उससे न रखते राग।
बाह्याभ्यंतर से होता है, जिनके अंदर पूर्ण विराग।।

आयु पूर्ण करते ही क्षण में, हो जाते हैं जिनवर सिद्ध।
सिद्ध शिला पर स्थित होते, जो अनादि से रही प्रसिद्ध।।

ऐसे परम जिनेश्वर के हम, चरणों शीश झुकाते हैं।
हम भी अर्हत् पदवी पावें, यही भावना भाते हैं।।

दोहा- तीर्थंकर पद प्राप्त कर, मिले मुक्ति हे नाथ।
मोक्षमार्ग में दीजिए, हमको भी प्रभु साथ।।

ॐ ह्रीं अतीतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- भक्त खड़े हैं द्वार, पूजा करने आपकी।
मिल जाए उपहार, मोक्षमहल में वास हो।।

इत्याशीर्वाद : (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

विशद भाव से इच्छा होती, चरणों में झुक जाने की।
उपकारों के बदले भक्ति, कर कर्त्तव्य निभाने की।।
होकर भाव विभोर भक्ति में, गीत भक्ति के गाने की।
तज असार संसार भार यह, शिवपुर पदवी पाने की।।

भविष्यकालीन श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन

स्थापना

काल अनागत भरत क्षेत्र में, होंगे तीर्थंकर चौबीस।
ज्ञानावरण आदि के नाशी, बनते केवल ज्ञानाधीश।।
तीर्थंकर पद तीन लोक में, श्रेष्ठ रहा है पूज्य त्रिकाल।
अरहंतों का आह्वानन् कर, वंदन करते हैं नतभाल।।
भक्त भावना भाते हैं शुभ, वह पवित्र पद पाने की।
कर्म नाशकर अपने सारे, मोक्ष महल में जाने की।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन भरत-ऐरावत क्षेत्रस्य चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन भरत-ऐरावत क्षेत्रस्य चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन भरत-ऐरावत क्षेत्रस्य चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद-दिग्बधु)

प्रासुक सुनीर निर्मल, सब कर्म मैल धोवे।
जन्मादि रोग क्षयकर, सारे विकार खोवे।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का ह्रदय में, मेरे कमल खिला है।।1।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित सुगंध द्वारा, भव ताप दूर होवे।
मन का विकार सारा, मम् शीघ्र पूर्ण खोवे।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का ह्रदय में, मेरे कमल खिला है।।2।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत धवल अखण्डित, यह हम चढ़ाने लाए।
निज पद रहा सुअक्षय, वह प्राप्त करने आए।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का ह्रदय में, मेरे कमल खिला है।।3।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प लिए पुष्पित, पद में चढ़ाने लाए।
कामाग्नि जल रही जो, हम वह बुझाने आए।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का ह्रदय में, मेरे कमल खिला है।।4।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस हमने, कई भाँति के बनाए।
अपनी क्षुधा की बाधा, हम भी नशाने आए।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का ह्रदय में, मेरे कमल खिला है।।5।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस रत्न दीप से शुभ, जगमग प्रकाश होवे।
अज्ञान के तिमिर को, जो पूर्ण रूप खोवे।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का ह्रदय में, मेरे कमल खिला है।।6।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूप अब सुगंधित, हम यह जलाने लाए।
हैं कर्म अष्ट दुखकर, उनको नशाने आए।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का हृदय में, मेरे कमल खिला है।।7।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कई भाँति के सरस फल, हम यह चढ़ाने लाए।
है मोक्षफल अखण्डित, वह प्राप्त करने आए।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का हृदय में, मेरे कमल खिला है।।8।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अर्घ्य शुभ समर्पित, करते हैं भाव से यह।
पद हम अनर्घ पावें, जो सिद्ध पाए हैं वह।।
अर्चा का हमको पावन, सौभाग्य यह मिला है।
श्रद्धान का हृदय में, मेरे कमल खिला है।।9।।

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा– **तीर्थंकर पद लोक में, अतिशय मंगलकार।**
पुष्पांजलि कर पूजते, सविनय बारम्बार।।

द्वितिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

चाल–टप्पा

तीर्थंकर प्रकृति के बंधक, श्रेणिक नृप भाई।
पद्मनाभ तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।1।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री पद्मनाभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्षभाव से सुरगण मिलकर, बाजे बजवाई।
सुरप्रभ जिन तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।2।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री सूरप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुपथ विनाशक सुपथ प्रकाशक, जग मंगलदायी।
सुप्रभ जिन तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।3।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री सुप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व चराचर द्रव्य अनंतक, युगपद दर्शायी।
श्री स्वयंप्रभ जिनवर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।4।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री स्वयंप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाबली हैं सर्व लोक में, घाती कर्म नशाई।
श्री सर्वायुध जिनवर होंगे, जग मंगलदायी।।

श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।5।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री सर्वायुध तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदर्शन कर जिन बनने की, मन में सुधि आई।
तीर्थंकर जयदेव बनेंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।6।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री जयदेव तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम का ध्यान लगाकर, निज शक्ति पाई।
श्री उदयप्रभ जिनवर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।7।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री उदयप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के गुण की महिमा जग में, जिनने प्रगटाई।
प्रभादेव तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।8।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री प्रभादेव तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ तीर्थंकर पद की, महिमा बतलाई।
श्री उदंक तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।9।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री उदंक तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर बनकर प्रभु पाते, जग में प्रभुताई।
प्रश्नकीर्ति तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।10।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री प्रश्नकीर्ति तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के तन को लखकर जग की, शोभा शर्माई।
जयकीर्ति तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।11।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री जयकीर्ति तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र के दर्श पर्स से, प्रकृति हर्षाई।
पूर्णबुद्धि तीर्थंकर होंगे, जग मंगलदायी।।
श्री जिन पद पूजों भाई।
तीन लोक में भवि जीवों को अतिशय सुखदायी।।12।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री पूर्णबुद्धि तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-छंद)

जो सर्व कषाय विनाशी, हैं केवलज्ञान प्रकाशी।
श्री निःकषाय जिनदेवा, हम पावें पद की सेवा।।13।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री निःकषाय तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न रहा कर्म का मल है, पाया चेतन का बल है।
जिनराज विमल गुण गाऊँ, चरणों में शीश झुकाऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री विमल तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं विपुल गुणों के धारी, इस जग में मंगलकारी।
जिनराज विपुल प्रभ जानो, जग में हितकारी मानो।।15।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री विपुल तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल चेतन चित्‌धारी, श्री निर्मल जिन अविकारी।
जो जिनवर पद पाएँगे, फिर मोक्षपुरी जाएँगे।।16।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री निर्मल तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो तीन गुप्तियाँ धारे, वह सारे कर्म निवारे।
श्री चित्रगुप्त जिनदेवा, होंगे कर्मों के खेवा।।17।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री चित्रगुप्त तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन परम समाधि धारी, बन जाते हैं अविकारी।
जिनदेव समाधिगुप्ति, पाएँगे भव से मुक्ति।।18।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री समाधिगुप्ति तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्वयं बुद्ध होते हैं, वह कर्म सभी खोते हैं।
जिनदेव स्वयंभू ध्यावें, हम भी स्वयंभू बन जावें।।19।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री स्वयंभू तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सर्व दर्प के त्यागी, शुभ मार्दव धर्मानुरागी।
कंदर्पदेव जिन स्वामी, होंगे जो अन्तर्यामी।।20।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री कंदर्पदेव तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकर्म जयी बन जाते, वह सारे कर्म नशाते।
जयनाथ साथ अब दीजे, प्रभु चरण शरण रख लीजे।।21।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री जयनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज विमल गुणधारी, श्री विमलनाथ त्रिपुरारी।
तुमने जो लक्ष्य बनाया, वह मेरे मन भी भाया।।22।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री विमलनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दिव्य देशना देते, जग का कालुष हर लेते।
वह दिव्यदेव जिनराजा, हैं तारण-तरण जहाजा।।23।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री दिव्यदेव तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं अनंत बलधारी, जिन पृथ्वीपति अवतारी।
अंतिम तीर्थंकर जानो, श्री अनंतवीर्य पहिचानो।।24।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन श्री अनंतवीर्य तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भावी तीर्थंकर कहे, आगम में चौबीस।
जिनवर के चरणों विशद, झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्य अनागतकालीन चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- कहे अनागत काल के, तीर्थंकर चौबीस।
जयमाला गाते परम, उन्हें झुकाकर शीश।।

(शम्भू छंद)

तीर्थंकर बनते वह प्राणी, जिनने संयम को धारा।
उनकी महिमा गाने को मम्, अर्पित हैं जीवन सारा।।

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, सम्यक्‌दर्शन पाते हैं।
भाग्य उदय आ जावे जिनका, वह सद्ज्ञान जगाते हैं।।

अंतर में वैराग्य जगे तव, सम्यक्‌चारित्र आता है।
तीनों के मिलने पर पावन, रत्नत्रय बन जाता है।।

रत्नत्रय की शुभम् त्रिवेणी, में अवगाहन जो करते।
राग-द्वेष मद मोह रहित हो, कर्म कालिमा को हरते।।

त्रय गुप्ति के द्वारा अपने, कर्मों का संवर करते।
आत्मध्यान से कर्म निर्जरा, द्वारा नित्य कर्म झरते।।

लगे अनादि कर्म घातिया, क्षण में उन्हें नशाते हैं।
दर्शन ज्ञान अनंतवीर्य सुख, अनंत चतुष्टय पाते हैं।।

बाह्य विभूति समवशरण भी, आकर देव रचाते हैं।
जय-जयकारों के द्वारा सुर, यह आकाश गुँजाते हैं।।

प्रातिहार्य के द्वारा प्रभु की, महिमा को दिखलाते हैं।
भक्ति भाव से पूजा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।

सर्व श्रेष्ठ पद रहा लोक में, कुछ कहने से अर्थ नहीं।
शब्दों में जिसकी महिमा को, कहने की सामर्थ नहीं।।

यह जान प्रभु तव चरणों में, हम अनुगामी बनकर आए।
पूजा करने को तुच्छ द्रव्य, यह साथ में अपने हम लाए।।

हम पूजा का फल पाने को, शुभ आशा लेकर आए हैं।
दोगे प्रभु मोक्ष महाफल शुभ, चरणों में आश लगाए हैं।।

सुनते हैं इस दर पे कोई, सद्भक्त निराशा नहिं पाते।
जो शरणागत बनकर आते, वह शीघ्र मोक्षफल पा जाते।।

दोहा- मोक्ष महाफल प्राप्त हो, हमको हे जिनदेव।
जब तक मम् जीवन रहे, करूँ चरण की सेव।।

ॐ ह्रीं अनागतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पदवी यह तीर्थेश की, पूजनीय है श्रेष्ठ।
भक्तिमय जीवन बने, मेरा पूर्ण यथेष्ट।।

इत्याशीर्वाद : (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

वर्तमानकालीन श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन

स्थापना

वर्तमान की भरत क्षेत्र में, चौबीसी है सर्व महान्।
वृषभादि महावीर प्रभु का, करते भाव सहित गुणगान।।
भक्ति भाव से नमस्कार कर, विनय सहित करते पूजन।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो मम्, करते हैं हम आह्वानन्।।
जिस पथ पर चलकर के भगवन्, तुमने स्व पद को पाया है।
उस पथ पर बढने का पावन, हमने भी लक्ष्य बनाया है।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्य वर्तमानकालीन घाती कर्मविनाशक सर्वमंगलकारी श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्य वर्तमानकालीन घाती कर्मविनाशक सर्वलोगोत्तम श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्य वर्तमानकालीन घाती कर्मविनाशक सर्वजगतशरण श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छंद)

पाप कर्म के कारण प्राणी, जग में कई दुःख पाते हैं।
पाकर जन्म मरण भव-भव में, तीन लोक भटकाते हैं।।
जन्म जरा के नाश हेतु प्रभु, निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य कर्म के प्रबल योग से, जग का वैभव पाते हैं।
भोग पूर्ण न होने से हम, मन में बहु अकुलाते हैं।।
संसार वास के नाश हेतु, सुरभित यह गंध चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है जीव तत्त्व अक्षय अखण्ड, हम उसे जान न पाते हैं।
फँसकर मिथ्यात्व कषायों में, हम चतुर्गति भटकाते हैं।।
अक्षय अखण्ड पद पाने को, हम अक्षत धवल चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हैं भिन्न तत्त्व हमसे अजीव, वह जग में भ्रमण कराते हैं।
सहयोगी बनकर विषयों में, वह लालच दे बहलाते हैं।।
हो कामवासना नाश प्रभु, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव के कारण से प्राणी, इस जग में नाच नचाते हैं।
जो क्षुधा व्याधि से हो व्याकुल, मन में अतिशय अकुलाते हैं।।
हम क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, चरणों नैवेद्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर नीर सम बंध तत्त्व ने, आतम में बंधन डाला।
सहस्र रश्मिवत् पूर्ण प्रकाशित, चेतन को कीन्हा काला।।
बंध तत्त्व के नाश हेतु हम, घृत का दीप जलाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्ति समिति व्रताभाव में, संवर कभी न कर पाए।
कर्मों ने भटकाया जग में, उनसे छूट नहीं पाए।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, सुरभित धूप जलाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म निर्जरा न कर पाए, सम्यक् तप से हीन रहे।
जग भोगों के फल पाने में, हमने अगणित कष्ट सहे।।
मोक्ष महाफल पाने को हम, श्रीफल यहाँ चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप के फल हैं निष्फल, उसमें हम भरमाए हैं।
आस्रव बंध के कारण हमने, जग के बहु दुःख पाए हैं।।
पद अनर्घ को पाने हेतु, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्रस्य वर्तमानकालीन सर्व तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा– **वर्तमान के जानिए, तीर्थंकर चौबीस।**
पुष्पाञ्जलि क्षेपण करूँ, चरण झुकाऊँ शीश।।

तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सोरठा

मरुदेवी के लाल, नाभिराय के सुत कहे।
चरण झुकाऊँ भाल, ऋषभनाथ के चरण में।।1।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ भगवान, कर्मशत्रु को जीतकर।
जग में हुए महान्, जिन पद वंदन हम करें।।2।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्व चिह्न पहिचान, संभवनाथ जिनेन्द्र की।
करूँ विशद गुणगान, जिन गुण पाने के लिए।।3।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन जिनदेव, चरण वंदना मैं करूँ।
विनती करूँ सदैव, चरण-शरण हमको मिले।।4।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ पद माथ, झुका रहे हम भाव से।
मुक्ति पथ में साथ, दीजे हमको जिन प्रभो।।5।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नृप धारण के लाल, पद्मप्रभ हैं पद्म सम।
वन्दन करूँ त्रिकाल, तव पद पाने के लिए।।6।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व के पाद, स्वस्तिक लक्षण शोभता।
रहे सभी को याद, जिनवर की महिमा अगम।।7।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कान्ति चन्द्र समान, चन्द्र चिह्न जिनका परम।
इन्द्र करें गुणगान, भक्ति में तल्लीन हो।।8।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत ने अंत, कीन्हा है संसार का।
आप हुए जयवंत, सद्गुण के सरवर बने।।9।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ जिनेन्द्र, शीलव्रतों को पाए हैं।
पूजें इन्द्र नरेन्द्र, मन में हर्ष मनाए हैं।।10।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय कर्म का नाश, जिन श्रेयांस की भक्ति से।
आतम ज्ञान प्रकाश, होता है भवि जीव का।।11।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य भगवान, तीन लोक में पूज्य हैं।
शत-शत् करूँ प्रणाम, पूजा करके भाव से।।12।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकाल तीर्थंकर श्री वासुपूज्यनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद-हरिगीता)

विमलनाथ का विमल ज्ञान है, द्रव्य चराचर भाषी।
कर्म नाशकर शिवपुर पाएँ, पद पाया अविनाशी।।13।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतनाथ जिनवर ने सारे, घाती कर्म विनाशे।
ज्ञान अनंतानंत प्राप्तकर, लोकालोक प्रकाशे।।14।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ भगवान लोक में, विशद धर्म के धारी।
सर्व लोक में जिनका दर्शन, होता मंगलकारी।।15।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव चक्रीपद पाया, तीर्थंकर पद धारा।
शांतिनाथ है तीन लोक में, पावन नाम तुम्हारा।।16।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुनाथ गुणों के सागर, सर्व गुणों के दाता।
तीन लोकवर्ती जीवों के, कुंथुनाथ हैं त्राता।।17।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, आठ गुणों को पाए।
अरहनाथ भगवान जगत् में, सब के हृदय समाए।।18।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म रूप मल्लों की सेना, जिनके आगे हारी।
मल्लिनाथ भगवान आपकी, दुनियाँ बनी पुजारी।।19।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत ने मुनि व्रतों को, अपने हृदय सजाया।
मोक्षमार्ग के राही जिनवर, केवलज्ञान जगाया।।20।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथिलापुर नगरी के राजा, विजयसेन कहलाए।
जन्म प्राप्त कर नमीनाथ ने, सबके भाग्य जगाए।।21।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री नमीनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशुओं की पीड़ा को लखकर, मन में करुणा जागी।
नेमिनाथ जग की माया तज, क्षण में बने विरागी।।22।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर उपसर्ग पार्श्व के ऊपर, हार कमठ ने मानी।
ध्यान अग्नि से कर्म जलाए, बन गये केवलज्ञानी।।23।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज पर विजय प्राप्त करते जो, महावीर कहलाते।
ऐसे वीर प्रभु के चरणों, सादर शीश झुकाते।।24।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री महावीर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- वर्तमानकालीन के, हैं चौबीस जिनेन्द्र।
करे प्रतिष्ठा बिंब की, जग के इन्द्र नरेन्द्र।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन चतुर्विंशति जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- प्रभु भक्त हम आपके, भक्ति करें त्रिकाल।
चौबीसों जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

चाल-टप्पा

कर्म घातिया नाश किए तव, हुए ज्ञानधारी।
मोक्षमार्ग पर बढ़ने वाले, जन-जन उपकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।1।।

आदिनाथ हैं आदि जिनेश्वर, जिन गुण के धारी।
अजितनाथ हैं नाथ लोक में, अति विस्मयकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।2।।

संभव जिन की भक्ति भाई, जग में हितकारी।
अभिनंदन का वंदन होता, जग मंगलकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।3।।

सुमतिनाथ की दिव्य देशना, अतिशय सुखकारी।
पद्मप्रभु जी रहें लोक में, बनकर अविकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।4।।

जिन सुपार्श्वजी पार्श्वमणि सम, हैं गुण के धारी।
चन्द्रप्रभु जी पूर्ण चाँदनी, सम शीतल भारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।5।।

पुष्पदंत ने कर्म अंत की, कीन्ही तैयारी।
शीतलनाथ जिनेश्वर की तो, महिमा है न्यारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।6।।

श्रेयनाथजी श्रेय प्रदाता, हैं करुणाकारी।
वासुपूज्य जग पूज्य हुए हैं, ऋषिवर अनगारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।7।।

विमलनाथ जी मुक्ति हमको, मिल जाए प्यारी।
श्री अनंत जिन हैं इस जग में, गुण अनंतधारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।8।।

धर्मनाथ जिनराज कहे हैं, विशद धर्मधारी।
शांतिनाथ जी हैं इस जग में, परम शांतिकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।9।।

कुंथुनाथ जिन हुए लोक में, त्रयपद के धारी।
अरहनाथ भी रहे जहाँ में, अति महिमाधारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।10।।

मल्लिनाथ कर्मों के नाशी, अतिशय अविकारी।
मुनिसुव्रतजी व्रत धारण कर, हुए ज्ञानधारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।11।।

नमीनाथ की पूजा करते, सारे नर-नारी।
नेमिनाथ वैराग्य धारकर, पहुँचे गिरनारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।12।।

पार्श्वनाथ ने कठिन परिषह, सहन किए भारी।
महावीर की महिमा जग में, है विस्मयकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।13।।

(छन्द-घत्तानन्द)

जय-जय जिन स्वामी अन्तर्यामी, मोक्षमार्ग के पथगामी।
जय शिवपुरगामी त्रिभुवननामी, सिद्ध शिला के हो स्वामी।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्य वर्तमानकाल सम्बन्धी सर्व तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चौबीसों जिनराज को, वंदन बारम्बार।
तीर्थंकर पद प्राप्त कर, पाऊँ भवदधि पार।।

इत्याशीर्वाद : (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

विद्यमान बीस तीर्थंकर की पूजन

स्थापना

हे लोकपूज्य ! हे महाबली !, हे परम ब्रह्म ! हे तीर्थंकर !
हे ज्ञानदिवाकर धर्मपोत !, हे परमवीर ! हे करुणाकर !
हे महामति ! हे महाप्रज्ञ !, हे महानंद ! हे चतुरानन !
हे विद्यमान तीर्थंकर जिन, हम करते उर में आह्वानन्।।
हे नाथ ! दया करके उर में, प्रभु मेरा भी उद्धार करो।
यह भक्त आपके हैं साही, हे दयासिन्धु ! उपकार करो।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज-विद्यमान.. बीस तीर्थंकर पूजा..

जन्मादि के रोगों ने, भव भ्रमण कराया।
कर्म बंध करके हमने, संसार बढ़ाया।।
श्री जिनेन्द्र पद दे रहे, प्रासुक जल की धार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।1।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव आताप में जलते, जग के जीव हैं।
राग-द्वेष कर बाँधे, कर्म अतीव हैं।।
चरणों चर्चित कर रहे, चंदन केसर गार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।2।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद के हेतु, नहीं पुरुषार्थ किए हैं।
भव अनेक पाकर, यों हमने गवाँ दिए हैं।।
चढ़ा रहे अक्षत धवल, अक्षय विविध प्रकार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।3।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामवासना में फंसकर, प्राणी भरमाया।
कामबली ने वश में कर, जग में भटकाया।।
पुष्प चढ़ाते भाव से, महके अपरम्पार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।4।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग के द्वारा, जग के जीव सताए।
करके सर्वाहार नहीं वह, तृप्ती पाए।।
यह नैवेद्य बनाए हैं, हमने शुभ रसदार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।5।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध के कारण, जग में भटक रहे हैं।
पर पदार्थ पाकर कई, हमने कष्ट सहे हैं।।
दीप जलाकर लाए हैं, मणिमय मंगलकार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।6।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ने हमको जग में बहुत सताया।
कष्ट सहे सदियों से उनका अन्त न आया।।
धूप सुगन्धित अग्नि में खेते अपरम्पार।
पूजा करते भाव से पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।7।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे भटकते फल की आशा में हम भारी।
अतः नहीं बन सके मोक्ष के हम अधिकारी।।
चढ़ा रहे हम भाव से फल यह विविध प्रकार।
पूजा करते भाव से पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।8।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ पाने का मन में भाव न आया।
पञ्च परावर्तन करके बहु संसार बढ़ाया।।
अर्घ्य चढ़ाते चरण में पाने को शिवद्वार।
पूजा करते भाव से पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल परम शिवकार जी।।9।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

सोरठा- विद्यमान तीर्थेश, जानो बीस विदेह के।
हरते जग का क्लेश, करूँ अर्चना भाव से।।

चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

छंद–*ताटक*

जिनका यश सौरभ स्वरूप शुभ, शोभित होता मंगलकार।
समवशरण में सीमंधर जिन, दिव्य देशना दें मनहार।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।1।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री सीमंधर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगमंधरजी है इस युग में, सर्व चराचर के ज्ञाता।
नय प्रमाण युगपत् वस्तु के, ज्ञानी है जग में त्राता।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।2।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री युगमंधर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय को पाकर के शुभ, निज आतम का ध्यान किए।
बाहु जिन तीर्थेश लोक में, जन-जन का कल्याण किए।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।3।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री बाहु जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपथ के नेता सुबाहु जिन, कर्म कलंक विनाश किए।
प्राप्त किए जो शाश्वत शिवसुख, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।4।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री सुबाहु जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वलोक में उत्तम संयम, प्राप्त किए सुजात जिन देव।
कर्मघातिया नाश किए प्रभु, वन्दूँ जिनके चरण सदैव।।

विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।5।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री सुजात जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंप्रभु जिन का चिह्न चन्द्रमा, अभिनव गुण जो प्राप्त किए।
मंगल छाया सर्वलोक में, देवों ने जयकार किए।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।6।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री स्वयंप्रभु जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृष को पाने वाले अनुपम, वृषभानन शुभ नाम रहा।
जिन की पूजा से हो जाता, भक्तों का कल्याण अहा।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।7।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री वृषभानन जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श ज्ञान सुख पाने वाले, पाए वीर्य अनंत महान।
अनंतवीर्य जिनवर के चरणों, भक्त करें सम्यक्श्रद्धान।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।8।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री अनन्तवीर्य जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका तेज सूर्य की आभा, फीका करता मंगलकार।
श्री सूरप्रभ जिन के चरणों, वंदन मेरा बारम्बार।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।9।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री सूरप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर पद पाने वाले, जन्मे प्रभो ज्ञानधारी।
श्री विशालप्रभ के चरणों की, भक्ति है शिव सुखकारी।।
विद्यमान होते विदेह में, परम पूज्य तीर्थंकर बीस।
उनके चरणों वंदन करते, झुका रहे हैं अपना शीश।।10।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री विशालप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : हरिगीता)

प्रभु श्रेष्ठ संयम प्राप्त कीन्हें, वज्रधर कहलाए हैं।
जो कर्मभू के तोड़ने को, वज्र बनकर आए हैं।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।11।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री वज्रधर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रमा सम नयन जिनके, कहे चन्द्रानन प्रभो।
कर्म का विध्वंस करके, बन गये अर्हत् विभो।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।12।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री चन्द्रानन जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म शोभित चिह्न जिनके, जो विशद ज्ञानी कहे।
भद्रबाहु जिन प्रभु के, भक्त सब प्राणी रहे।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।13।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री भद्रबाहु जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाबल को धारते जो, चन्द्रमा लक्षण कहा।
जिन भुजंगम नाथ का यश, यह दिखाई दे रहा।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।14।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री भुजंगम जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकवर्ती ईश के भी, ईश जिन ईश्वर कहे।
नगर सीमा के सुभानु, धर्म के भूपति कहे।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।15।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री ईश्वर जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिप्रभु ने धर्म नेमि, को सम्हाला हाथ है।
मोक्षपथ के बने राही, सूर्य लक्षण साथ है।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।16।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री नेमिप्रभ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर के भी वीर अनुपम, वीरसेन जिनेश हैं।
कर्म की सेना पराजित, कर हुए तीर्थेश हैं।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।17।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री वीरसेन जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व ज्ञाता और दृष्टा लोक में पहचानिए।
महाभद्र जिनेश जग में, सर्व मंगल मानिए।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।18।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री महाभद्र जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवयश के चरण में यश, भी झुकाता भाल है।
चिह्न स्वस्तिक से सुशोभित, की यहाँ जयमाल है।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।19।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री देवयश जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितवीर्य है वीर अनुपम, कर्म का कीन्हे शमन।
नाश करके कर्म आठों, मुक्ति पथ कीन्हें गमन।।
शुभ अर्चना के हेतु प्रभु की, पुष्प ले आए शरण।
हम कर रहे हैं प्रभु पद में, भाव से शत्-शत् नमन्।।20।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकर श्री अजितवीर्य जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान होते यह बीस।
कभी अधिकतम साठ एक सौ, होते जिन्हें झुकाऊँ शीश।।
समवशरण में शोभित होते, कमलासन पर भली प्रकार।
सर्व जगत् में मंगलकारी, जिनपद वंदन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अजितवीर्यांश्चेति विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शाश्वत रहे विदेह में, जिन तीर्थंकर बीस।
गाते हैं जयमालिका, चरण झुकाते शीश।।

पद्धरि छन्द

शाश्वत यह लोकालोक जान, शुभ मध्यलोक जिसमें महान्।
है जम्बूद्वीप मध्य पावन, जिसमें मेरु है मन भावन।
जिसके पूरब पश्चिम विदेह, जिससे प्राणी करते स्नेह।
है क्षेत्र पञ्च पावन महान्, शत् एक षष्टि उपक्षेत्र जान।
शाश्वत तीर्थंकर जहाँ बीस, सेवा में तत्पर रहें ईश।
यह शाश्वत होते बीस नाम, जिनके चरणों करता प्रणाम।
जिनवर होते कभी प्रति क्षेत्र, वह पाते केवलज्ञान नेत्र।
संख्या होती शत एक साठ, जो करें नष्ट सब कर्म काठ।
जिन की भक्ति है सौख्यकार, प्राणी हों भव से शीघ्र पार।
जो चरण-शरण पाते महान्, जिन पद में करते भक्तिगान।
उन सब जीवों की बढ़े शान, वह पाते प्रभु से ज्ञानदान।

हम भी पा जाएँ शरण नाथ, विनती करते हैं जोड़ हाथ।
सौभाग्य जगे मेरा जिनेश, मैं रहूँ शरण में ही हमेश।
तव दर्शन कर हों सफल नेत्र, मैं रहूँ कहीं भी किसी क्षेत्र।
मन में प्रभु जागी यही चाह, मुक्ति की हमको मिले राह।
न पड़े मार्ग में कोई रोध, जागे मम् अंतर में सुबोध।
हम चातक बनकर खड़े नाथ, रखके माथे पर दोय हाथ।
बरसो स्वाती की बूँद रूप, जागे अंतर में निज स्वरूप।
बन आओ प्रभु मेरे सुमीत, प्रभु आप निभाओ सही प्रीत।
तुमसे प्रभु मेरी लगी आश, मेरे जीवन का हो विकास।

छंद-घत्तानंद

बीसों तीर्थंकर, हैं करुणाकर, शुभ विदेह के उपकारी।
महिमा हम गाते, शीश झुकाते, सर्वलोक मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिनवर बीस विदेह के, करते कृपा महान्।
मुक्ति पद के भाव से, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जाप्य :- ॐ ह्रीं भूत-भविष्यत-वर्तमान विदेह क्षेत्रस्य तीर्थंकरेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- संचालक हैं तीर्थ के, श्रीधर कहे जिनेश।
गाते हम जयमालिका, जय हो जिन तीर्थेश।।

पद्धरि छंद

जय-जय तीर्थंकर महादेव, तव चरणों की मैं करूँ सेव।
बहु पूर्व पुण्य का उदय पाय, तीर्थंकर पद पाते जिनाय।
शुभ रत्नवृष्टि करते सुरेन्द्र, अर्चा करते पद में शतेन्द्र।
महिमा का जिनकी नहीं पार, है अतिशयकारी कई प्रकार।

प्रभु प्रकट किए कैवल्यज्ञान, पाते हैं जिन प्रभु से कल्याण।
जिनके गुण होते हैं अपार, छियालीस मूलगुण लिए धार।
हो समवशरण जिन का महान्, पद वंदन करते देव आन।
दश जन्म के अतिशय हैं विशेष, पाते स्वभाव जो-जो जिनेश।
दश केवलज्ञान के कहे देव, जो ज्ञान प्रकट होते सदैव।
चौदह अतिशय मिल करें देव, करते जिनवर की भक्ति एव।
वसु प्रातिहार्य होते अनूप, प्रभु चरणों में आ झुकें भूप।
भक्ति करते हैं बार-बार, नत होकर करते नमस्कार।
जिनकी महिमा का नहीं पार, जो हैं भक्तों के कण्ठहार।
हों भरत क्षेत्र में जिन त्रिकाल, जिन की गुण गाथा है विशाल।
जिनवर विदेह में कहे बीस, जो विद्यमान हैं जिन मुनीश।
हों शतक साठ कोई काल पाय, ऐसा वर्णन करते जिनाय।
है तीर्थंकर का पद महान्, जिनका करते हम भव्य ध्यान।
हम जिन चरणों की करें सेव, जो हैं मेरे आराध्य एव।
अंतिम है मेरी यही चाह, पा जाएँ हम भी यही राह।
भवसागर का मिल जाय पार, नर जीवन का वश यही सार।
अक्षय सुख में हो जाय वास, तव चरणों में मम् लगी आश।
मम् आशा होवे पूर्ण नाथ, हम विनती करते जोड़ हाथ।
दो मोक्षमार्ग में प्रभो साथ, तव चरणों में मम् झुका माथ।

छंद-घत्तानंद

जय-2 जिन स्वामी, अंतर्यामी, तीर्थंकर पद के धारी।
मुक्ति पथगामी, त्रिभुवन नामी, मोक्षमहल के अधिकारी।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- तीर्थंकर जिनदेव, अनंत चतुष्टय प्राप्त हैं।
पूजा करूँ सदैव, विशद भाव से श्रेष्ठतम।।

इत्याशीर्वाद : (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आरती

तर्ज– आज करें श्री विशदसागर की...

आज करें जिन तीर्थंकर की, आरती अतिशयकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, जिनवर के दरबार।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.....

सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भाई।
शुभ तीर्थंकर प्रकृति पद में, तीर्थंकर के पाई।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।1।।

मिथ्या कर्म नाशकर क्षायक, सम्यक्दर्शन पाया।
प्रबल पुण्य का योग प्रभु के, शुभ जीवन में आया।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।2।।

गर्भ जन्मकल्याणक आदि, आकर देव मनाते।
केवलज्ञान प्रकट होने पर, समवशरण बनवाते।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।3।।

समवशरण के मध्य प्रभु की, शोभा है मनहारी।
उभय लक्ष्मी से सज्जित है, महिमा अतिशयकारी।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।4।।

सर्व कर्म को नाश प्रभु जी, मोक्ष महल में जाते।
विशद सौख्य में लीन हुए फिर, लौट कभी न आते।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।5।।

तीर्थंकर पद सर्वश्रेष्ठ है, उसको तुमने पाया।
उस पदवी को पाने हेतु, मेरा मन ललचाया।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।6।।

नाथ आपकी आरती करके, उसके फल को पाएँ।
जगत् वास को छोड़ प्रभु जी, मोक्ष महल को पाएँ।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती..।।7।।

प्रशस्ति

मध्यलोक के मध्य है, जम्बूद्वीप महान्।
होती जम्बू वृक्ष से, जिसकी शुभ पहिचान।।1।।
भरत क्षेत्र में एक है, उत्तम भारत देश।
प्रांत एक जिसमें रहा, राजस्थान विशेष।।2।।
राजधानी उसकी रही, जयपुर है शुभ नाम।
बस्सी जिसके पास है, एक अनूठा ग्राम।।3।।
नगर मध्य मंदिर बड़ा, पार्श्वनाथ भगवान।
मूलनायक जिसमें रहे, तीर्थ सरीखी शान।।4।।
काल उत्सर्पिणी में सदा, चौबीस हुए जिनेश।
और अवसर्पिणी में विशद, होते हैं तीर्थेश।5।।
काल अनादि क्रम यही, चलता रहा त्रिकाल।
तीर्थंकर पद लोक में, पूज्य रहा हर काल।।6।।
वर्तमान अरु भूत के, अरु भावी तीर्थेश।
हैं विदेह के बीस जिन, विद्यमान अवशेष।।7।।
इनकी अर्चा के लिए, लिक्खा श्रेष्ठ विधान।
भाव सहित अर्चा करो, जग के सब धीमान।।8।।
ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी, शनिवार की शाम।
रचना पूरी कर किया, इससे पूर्ण विराम।।9।।
लघु धी लघुता से विशद, रचना हुई महान्।
जिन गुरु के आशीष से, किया गया गुणगान।।10।।
बुध जन पढ़कर के करें, इसका पूर्ण सुधार।
जिनवाणी का श्रेष्ठ यह, धारें कण्ठाहार।।11।।

***

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करने से, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते हैं उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननङ्क

ॐ ह्रीं 1008 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणीं से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1008 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1008 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1008 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1008 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1008 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1008 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आयें हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इल्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क

आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)